आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - RAJHIN/2007/19628
ISSN 2455-6033

मीरायन

(साहित्यिक-सांस्कृतिक वैचारिक शोध-पत्रिका)

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका (इण्डियन लैंग्वेजेज, क्र.सं. 62)

वर्ष-16, अंक-01 (पूर्णांक-61) मार्च-मई 2022

सहयोग राशि

वार्षिक
व्यक्तिगत : 300.00 रुपया
संस्थागत : 400.00 रुपया
आजीवन (दस वर्षीय)
व्यक्तिगत : 3000.00 रुपया
संस्थागत : 4000.00 रुपया
सहयोग राशि मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ के पक्ष में नकद/ऑन लाइन/चैक/ बैंक ड्राफ्ट द्वारा भिजवाई जा सकती है।

कार्यालय एवं सम्पर्क-सूत्र
मीरा स्मृति संस्थान
मकान नं. 25, क्रेन्ड्स कॉलोनी,
पार्वती गार्डन के पीछे,
सेंथी, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)
मो. 094141-48537

ई-मेल :
samdanisatya@gmail.com

प्रकाशन-तिथि
21 मई, 2022

संस्थापक सम्पादक
कीर्तिशेष स्वामी (डॉ.) ओमू आनन्द सरस्वती

सम्पादक
सैत्यनारायण समदानी

मीरायन के बैंक खाता का विवरण

1.	खाता का नाम	मीरा स्मृति संस्थान (MEERA SMRITI SANSTHAN)
2.	खाता संख्या	बचत खाता 51042428405
3.	बैंक शाखा	भारतीय स्टेट बैंक, कलक्टरेट शाखा चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
4.	IFSC	SBIN0031237

Designed by: उमेश अजमेरा, श्रीजी डॉट कोम, चित्तौड़गढ़-9829079159

समस्त सम्पादकीय सहयोग अवैतनिक एवं मानद है। रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवाद चित्तौड़गढ़ न्यायाधिकरण-क्षेत्र के अधीन होंगे।

ISSN 2455-6033

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट की भारतीय भाषाओं (इण्डियन लैंग्वेजेज) की पत्रिकाओं में क्र.सं. 62 पर सम्मिलित

वर्ष-16 अंक : 1 (पूर्णांक - 61) मार्च-मई 2022

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की त्रैमासिक शोधपत्रिका

'श्रीमद्भगवद्गीता' एवं 'कबीर ग्रंथावली' में वर्णित कर्मयोग का अध्ययन

- डॉ. बिजेंद्र कुमार
- श्रीमती पिंकी

शोध आलेख सार -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्तवकर्मणि।।

'श्रीमद्भगवद्गीता' का यह श्लोक मानव को बिना कर्म फल की लालसा के कर्म करने की प्रेरणा देता है। भारतीय हिंदू समाज में अनादि काल से ही कर्मयोग के महत्व को स्वीकार किया जाता रहा है। यहाँ बिना कर्म के जीवन का अस्तित्व ही नहीं है। प्रकृति के गुणों के अनुसार भी मानव कर्म करने के लिए बाध्य है। इसलिए कर्म का अस्तित्व प्रकृति से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए वैदिक काल से लेकर अब तक मानव मात्र का अंतिम लक्ष्य परमतत्त्व की सिद्धि यानी जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त होना रहा है। इस ध्येय के लिए मानव प्रभु भक्ति के द्वारा ज्ञान को धारण करना चाहता है। लेकिन जब तक वह सत् कर्मों को लेकर नहीं चलता, तब तक जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त नहीं हो सकता। 'श्रीमद्भगवद्गीता' में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को तथा महात्मा कबीरदास ने अपनी वाणी द्वारा मानव मात्र के लिए इसी कर्मयोग का महत्त्व प्रतिपादित किया है। इस उपदेश को धारण करके मनुष्य सांसारिक विषय-वासनाओं, मोह-माया आदि के बंधन से निवृत्त होकर, मानव-मात्र के कल्याणार्थ कर्म करता हुआ, अपने कर्मों को प्रभुचरणों में अर्पित करता चले, जिससे उसका स्वयं का भी कल्याण हो सके। 'श्रीमद्भगवद्गीता' में श्रीकृष्ण अर्जुन को जब ज्ञान एवं भक्ति के महत्व को बताते हैं तो अर्जुन दुविधा में पड़ जाता है, फिर श्रीकृष्ण बताते हैं कि राजा जनक जैसे ज्ञानवान व्यक्ति भी आसक्तिरहित कर्म द्वारा ही परमसिद्धि को प्राप्त हुए। इसी प्रकार कर्म संन्यास से कर्म योग साधना में सुगम होने से श्रेष्ठ है। ऐसे ही कबीरदास जी कहते हैं कि कर्म-व्यापार एवं सदाचार ही मुक्तिदायक है। कर्म से ही ईश्वर पालक है। इसलिए आज के युग में भी मनुष्य का कर्मयोगी होना आवश्यक है ताकि उसको दुःखों से मुक्ति मिल सके। ऐसा करने से वह मानव कल्याणार्थ कर्म करेगा, जिससे विश्व में सद्भावना, प्रेम, भाईचारा, समता, समानता, एकता आदि का भाव पैदा होगा और उसको कर्मों के बंधन से मुक्ति मिल जाएगी, जो सबके जीवन का अंतिम लक्ष्य है।

बीज वाक्य :- कर्मयोग, कबीरदास, श्रीकृष्ण, अर्जुन, कबीर ग्रंथावली, श्रीमद्भगवद्गीता, मानव।

प्रस्तावना : - भारतीय समाज में अनादि काल से ही कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग के महत्त्व पर चर्चा-परिचर्चा होती रही है। प्रत्येक हिंदू ग्रंथ में इस विषय को महत्त्व प्रदान किया गया है। कहीं कर्म को ज्यादा महत्त्व दिया गया है तो कहीं ज्ञान को और कहीं भक्ति को। संतों ने आवागमन एवं कर्म को परस्पर आश्रित कहा है तथा मनुष्य को उनके कर्मों के अनुसार ही आवागमन के सिद्धांत की चर्चा की है। यहाँ यह कह पाना कठिन है कि यह जगत कब उत्पन्न हुआ था अर्थात् इस नाम रूपात्मक जड़-जगत की स्थिति कब से है। यह अनादि है, इसलिए यह कर्म प्रभाव भी अनादि है। कर्म के सिद्धांत का आरंभिक रूप वैदिक काल में यज्ञों द्वारा स्वर्ग की प्राप्ति की धारणा के रूप में मिलता है। चिंतकों ने कर्मयोग को शास्त्रीय आधार प्रदान किया। 'वृहदारण्यक' उपनिषद् में नाम और रूप के साथ कर्म की भी गणना है ('वृहदारण्यक', 16-1)।'

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख/रचना	पृष्ठ
1.	**मीरा-पद**	05
	1. **सन्त मीराबाई** (1) आवि गोकुल को ..... (2) मेरे जिय ऐसी	
2.	**मीरा-प्रशस्ति**	06
	2. श्री गोपीनाथ पारीक, 'गोपेश', जयपुर (राजस्थान) श्याम रस की रसीली मीरा	
3.	**सम्पादकीय**	07–10
	3. प्रो. सत्यनारायण सुमदानी, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) कश्मीर में जातीय सफाया (एथनिक क्लिंजिंग): 'द कश्मीर फाइल्स' के सन्दर्भ में।	
4.	**मीरा-सन्दर्भपक्ष**	
	4. तमन्ना सोनी, उदयपुर (राजस्थान) मीरा के पदों में श्रीकृष्ण की रूपमाधुरी-संदर्भ की संरचनाएँ	11–14
5.	**सन्त-भक्तपक्ष**	
	5. डॉ. विदुषी आमेटा, पिण्डवाड़ा (राजस्थान) मन मृग के परितोष की साधना : रामरेली सन्तों के विशेष सन्दर्भ में	15–24
	6. डॉ. (मिसेज) अरविन्दर कौर, देहरादून (उत्तराखण्ड) संत कवि गुरुनानक देवजी एवं भारतीय संस्कृति के तत्त्व : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	25–29
	7. श्री सुरिन्द्र सिंह, कबूलपुर जिला पटियाला (पंजाब) आर्थिक विषमता के संदर्भ में तुलसी काव्य का अध्ययन	30–38
	8. डॉ. बिजेन्द्र कुमार एवं श्रीमती पिंकी, कैथल (हरियाणा) श्रीमद्भगवद्गीता एवं कबीर ग्रंथावली में वर्णित कर्मयोग का अध्ययन	39–45
6.	**गाँधी सन्दर्भपक्ष**	
	9. डॉ. रश्मि गुर्जर, जयपुर (राजस्थान) गाँधीजी का गीता-दर्शन	46–48
7.	**इतिहासपक्ष**	
	10. डॉ. मनीष कुमार दासौधी, बड़वानी (मध्यप्रदेश) मुगलों के व्यापारिक जहाज और यूरोपीय लुटेरे	49–52